

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
शुद्धभाषाद सङ्ग्रह (कविता)	३
विस्तृत गणना (कविता)	४
"शुद्धभाषाद लीग सङ्ग्रह" के तीनों दिनों का प्रकाश समाप्ति	५
चिरकाळ से अतीत "शुद्धभाषाद लीग सङ्ग्रह" का - द्वितीय दिन	६-१०
तस्मिन् सुप्रथ	११-१३
प्रथे का देखा ?	१३-१४
"शुद्धभाषाद लीग सङ्ग्रह" का द्वितीय दिन और आ प्रकाश	१५-१८
"शुद्धभाषाद लीग सङ्ग्रह" का तृतीय दिन.	१९-२०
अभ्यास	२२
(i) श्री रामदेवकी कुलप	
(ii) अस्मिन् कवि वृत्ति	
(iii) शुद्ध भाषा का सम्बन्ध में	
IV. शिक्षक तथा छात्रवाद.	
विषय सूची.	
अंग्रेजी सुट.	७
सामाजिक	१२
की ली वी का मंत्र.	१४
काव्य सुट.	२१

क्रीडा - पत्र

प्रथम प्रकाश इति तव गुणो
उत्थम आभस्व तत्र तपोवन ॥

क्रीडा विभाग का मुख पत्र 'क्रीडा पत्र'

वर्ष
२०

अभारत - बीकानेर

मूल्य प्रति
२० रु०

अनुधातव नमोऽर्क

किया अदश सज्जति का सौख्य नर अहो ।

अभङ्गा मुग म हुन श्रमा क अखतार ॥

कहते लोग ककील हा छोड राह परवार ।

किमिदि मुरसरि सो गत अहोभङ्गा बरिणार ।

भारत के जाँय सनी , जग जननी के बूत ।

धुमर से उहिके , कर दी घूत अहूत ॥

पर मे जा अहोह के गिया रतूब अदश ।

अतः ओ पत्र रक्त ह लको दैत आ द्वेष ॥

फुस न समी सरकार की रिस ठर मे सगीत ।

देश बंधु की गालियों हुई म्सी लवलीत ॥

बमानद की मेदि पर दियो सीह बलिदत ।

लेख राग के सत्सरमा सुमी राग महान ॥

आरतिल क मर का गलत । गरा परीष ।

दस मिज प्रिय ललके रहे सार्जन सदा
समीत

(श्री व नमोऽर्क जी १११)

* OM *

Shradhanand Sports Tournament PROGRAMME

27th July, Saturday Evening.

4. to 4. 30. Band & National song.
4. 30. to 7. Wrestling.

28th July Sunday Morning.

6. to 6. 30. Band & National song.
6. 30. to 7. Acharya ji's speech.
7. to 8. Ravan race & Archery.
8. to 8. 30. Pillow fight.
8. 30. to 9. 30. Obstacle race.
9. 30. to 10. Frog race
10. to 10. 30. Chair race

Evening.

4. to 6. Lion race.
6. to 6. 30. Diving.
6. 30. to 7. Swimming under the water.

29th July Monday Morning.

6. to 6. 30. Band & National song.
6. 30. to 7. Hundred yards, race.
7. to 7. 30. Long jump.
7. 30. to 8. High jump.
8. to 9. Gymnastics.
9. to 9. 30. Putting the weight.
9. 30. to 10. 30. Long race.

Evening.

2. to 7. Long swimming.
7. to 8. Havan & feast.

Note. In addition to this, some time will be set apart for fencing.

SEVETKETU,
Games Secretary

G. K. P.

स्वर्ण-रेखा

१

स्त्री-धीनता जीवन (जन्म के प्रथम क्षेत्र में) की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। परन्तु
जब बातें हैं तब १५ वर्षों का चोर नहीं है। रिश्वत के लिए भी नहीं कर में रखे जा सकते
हैं।

२

कामों का भी वास्तविक रूप बदल रहा है परन्तु रिश्वत की आवश्यकता नहीं है।
कामों का भी विकास हुआ है। विशेष रूप से जल-संचयन और बिजली के बचत
की भी विकास का कारण है।

३

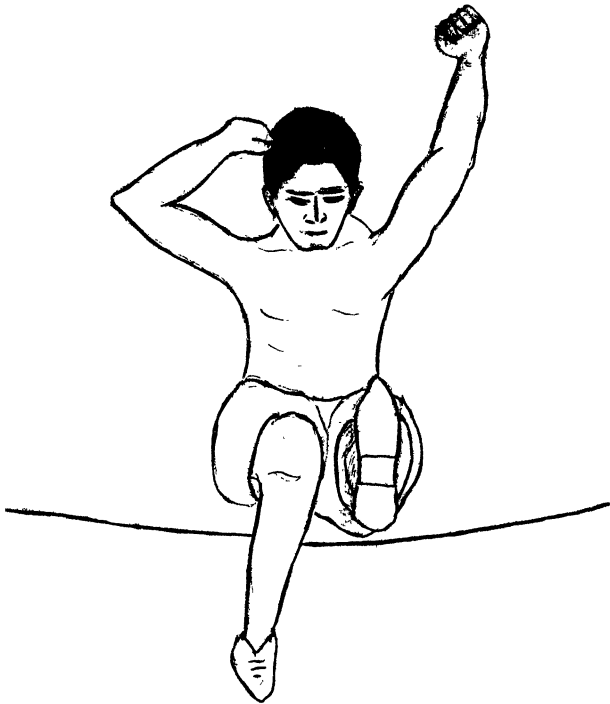
हम जानते हैं कि जगत की सहायक शक्तों को इस्तेमाल करके
जगत का हित मिलाने के लिए उनके प्रयोग करने से जगत का हित मिलाने के लिए
वही जगत में उत्तम व्यवस्था है। इस प्रकार का जगत ही उत्तम है।

४

जहाँ-जहाँ है वहाँ-वहाँ के अर्थ-व्यय भी जहाँ-वहाँ के अर्थ-व्यय ही जगत
के हित में ही है। जहाँ-वहाँ के अर्थ-व्यय ही जगत के हित में ही है। जहाँ-वहाँ के
अर्थ-व्यय ही जगत के हित में ही है।

श्री श्री १२-१२-१२

उत्तम शक्ति



ने मीरमें। एम कायतनाही पर सन्ने अलिङ्गना होजा चाले। एक वात सीर
की है। British Government ने एआरा माला फटा है। केसी वासि वस्ती
मनमें बैठे कायद हो जकारने गये पर कहर। म्जवासे एके इनने शरीर फोरे
के लमाने एके। और अब एके सम्भव है जब कि एके केनी के एके भा नू
कर। यहि युक्तसी न हो तो रनेके ज्ञान चले से म् अध के भस्ववपुष्ट हो

इसके अनंतर नीतिविरुद्ध कुछ विकासों ने एकारे सामने प्रकटमाना है
उन एके के लाने एके किय जो कृषि अन्वेषि बीनों ने एके के सामने किय
से। एक गते पर अक्षय वेध करवा निश्चित था। वेधने के लिए शरीर बोधों के
की। इतनेके नी की शर्म तीर। इं कृषि काहीके म्जने तम के आरि पर अक्षय
ज्ज नकोत इर लक्ष्य वेधने में सफलता प्राप्त की। इं अन्वेषण के एक देवनाथकी
ने भी अक्षयवेध में सफल होकर लक्षित की। इतनेके नी की शर्म वं उं -
आवकनी के अक्षयवेधों का कारण तीर पर इस कृषि के अक्षय में रही। एके
जो सकारा है अक्षयवेध-विना तैयारी के भी-व शर्मों के आन्वेषण-विषय सफल है

इसके अनंतर "तन्त्रिय प्रुध" प्राप्त हो है। इके जो किमी की। इके लोके
अन लोके गये इके अके में अवगतों के अन्वेषण के निम्नार्थ। इं कृषि काहीके
अन्वेषण की है इके अक्षयवेध-इतनेके नी की शर्मों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
की निम्नार्थ अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों

देव की भी प्रकृति एक एक एक विने सं का एक था। इतना ही के लोके का शक्ति
अक्षयवेधों के भी पर एके एके का वाद कर रहा है। एके अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
आक्षयवेधों Final की भी का ही कृषि। एक अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों

अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों
के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों के अक्षयवेधों

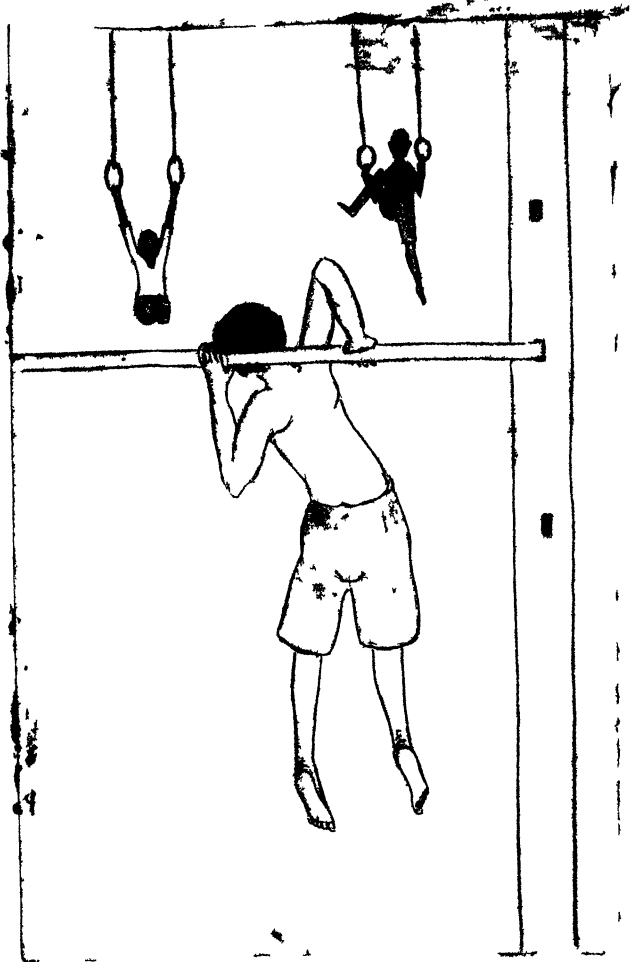
चिरम्बोण के प्रसिद्ध "सुदधानरुणीय सुन्दरय" का द्वितीय विषय

सौर, सन वाक्यादि का सुन्दरय उक्त जाता है।

तत्सु सुन्दर, कथारत्ना केरी में से आरज्ज, पत्त, आग, सुक्ति में गीने
में जाय। एक वंश की वीरु वृक्ष के बने चलाय, गरम और सौग, इनामम लैः ना.
येने वा सुदना आदि ये भी वाक्यादि। वाक्यादि में फले जागे वरि विरले ही ये। इन
वाक्यादि में से वाद विरलाने वाला भीने न उथय नञ्जट दिनी सुन्दरय जूने न्ने। पञ्चवि
ने सुन्दर फे आरजे प्रपनु ने सेके व्यक्ति के जिह्वेन वनी ने रस से कथे सुन्दरय में वाक्य
और वा सुवाक्यो विप्रथा। द्वितीय नञ्जट सुन्दरय की रहे। और सौगने भी वाक्यादि
यदिने सफल होते तो साफ प्रथम रहते। पत्तयों भी वाक्यादि विविधता भी सभ
में एक वाक्यादि वाद करने में व्येक भी सफल नहीं रहते। एक इय "सुदधानरुणीय" के विषय
में इत्या नञ्जट जाते हैं। "सुदधानरुणीय" में वाक्यादि सक्ती रहनी चाहिये। यह इत्या नञ्जट
सकन नहीं है। काश्चित् वाक्यादि में साय जातिसे वाक्यादि भी-जैसे व्यक्ति गणित
नञ्जट रहने का, कुछ कुछ वा कश्चित् विरल आदि- जयन नञ्जट रहनी
है। यह वाक्यादि नञ्जट विरल जयन की जीने वसतु नञ्जट इत्यादि में इस प्रकार जो
कथाने वाक्य न रहेगी।

इस प्रकार ज्ञाने वाक्य भी नामेनीही रहने सफल रहे। कथाने विरल
जिह्वेन बल कथे और जितनी उच्चार्थमें नञ्जी जो ने सभ फे सुन्दरय नञ्जट- नञ्जट
रिल ही जानता है।

शुभ्रादि



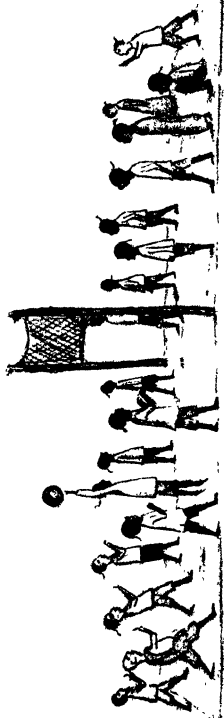
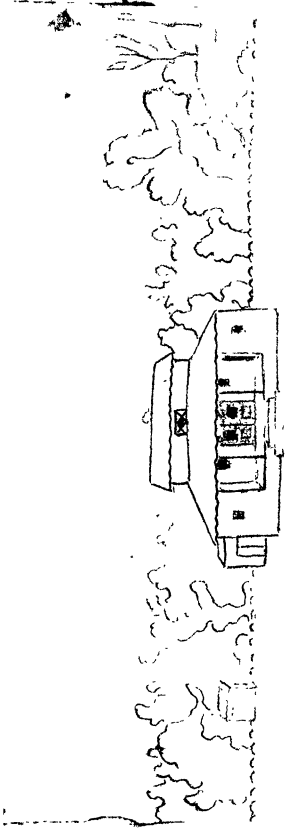
धर्म ने क्या देखा है ?

आत्मनो ह्यनुमत्या यो ज्ञानं प्राप्नोति ॥

धर्म ने क्या देखा है ?
(संक्षिप्त रूप में)

जान: क्या था ज्ञान क्या। ज्ञाने बुद्धिमानसी उमृशुभकारी को देखने की उतीकरी है। जिसने जित दिने जगत् को दिया है वह जोरहे थे - मैं भी उनमें से एक था।

"आद्यथा-व्यंजन" ने बाद रूप धारण किया। एतने ज्ञानम जित दि यथायी दिश जित नवी ही वस दिर नया था, निरंतर वरिष्ठ नर एत सब रूप धारण में उत्तर आत। प्रथम वाच गीत आरम्भ हुआ तबत मानावनी न्या मुकर न्याभ्याग हुआ। आचार्य जी ने कभी कभी से यह प्रश्न दिना दिने को स्वामी ने कबो लोभ है। उद्योगे नरा दि उतसे ज्ञान्या में *lopart man little spirit* आती है तथा *Discipline* में रचना गाम है और *Character* भी बनता है। प्रार उद्योगे संन्यास तशीय तथा भावित्य नष्टन दिश्या और सब कुल ने उद्योगियों ने कर्मम की दिने के रूप दिग नव से अन्ये रिमलाही वग सवसे है। ज्ञाने बाद वाच भीत हुआ। त्वेन आरम्भ हुआ। सर्व प्रथम धरण नाय वा त्वेन था। वह त्वेन वहुत ही मोहर त था मुकर था। स्वयं वग: ही गाम या विगु वसन मुदुने उभाग बुद्धावग था। रूप रूप दिश्याही ज्ञाने कर्म नारी से अये। सबसे प्र. प्र. नाप गारे। कुल वरुन रूप तथा मुदु तथा स्थाव ग नर गले। श्री गाम से नो ही केशव बन नागा ने विचार रही हुत। तथापि हृदा नानिये ने कभी मुदुन नाव निवा ज्ञान्या ही थी थी दिगु हाने छोड़े अमम ने प्रथम ने बाद ही पक्षीता देने का संकल्प देना नरु कथ उत स्त्रेत सव्यागां नो बुदुन उभात हुआ। वे भी गपनी नारी की मांग नसे लगे। कथ। उभा ने बाद लुदिना कालुस्य हुआ। वह त्वेन वहुत ही *Attraction* था। दो रिमलाही रूप नव जगते थे तथा नानिया जतर वर



"सुदधाना लीज साकुम्भ" वा द्वितीय विवत चरित्र उभे पर लक्ष्यम्.

सुदधाना लीज गण्ये खेने वाला व वनमरु से दुसरी डीज कागें कड कर बैर मर।
लुहरी ग इतमः करेने लगेनि हउये उभे लो मी १० गर । इतम सुतना वादि
उभे नम के देर से आग लग जई तिषल ये जं कर बीजे कडे मीपः गरी
लीज पत्र के बीरे संभोः है । इत रय न गज पची करे है । पिर मी तुम
कासम के वरी नैके देते । इतना कल्या का दि लो ग भोगि विही की तख सुपु-
नाम उपाय लख उख मर।

ओरी देर के बाद रक के गार रक सुदधे लोम भमचम का
कर मरुई मे पडेने लगी । सुदधे इतकी लखरी धः ग मोरने के दि लो ग लख
कर करेने ही हउ आते ये फरुदुद कां की बोरी की तख से, इत तरह मीसे
के दि लो ग इतने संभेले लेखके ले गते को सुदधे काली मे मल्ले की इदु
ममेदपु १२ फी हः लः, गोमम श्री राम युताः १० फी ० प्र इमे कीर मोयम
श्री देवनाथ की कीर श्री सुदेव १० फी ० हः इवे छडे।

इतना के बाद सुदधाना सुदधे सुदधे, बादमी जो इके के -
गादी मे जपने सुदधाना मे आने गेली नि कर पर पेरी बांध कर सुदधाने
अर अरुण मरुत अडे कीपी लः वा कीर सुदधत गावरी जो गेगु मे मोरु सुदध
मे मिलागे सुदधाना का सवको कमाड कर रल था । सुदधे पर मोरु सुदध
दि मे खलव, इतके मोरु सुदध, लखिण्ड के रलये नागे है । कीर सुदधे गार
मे दिनु सोन मे मरु सुदधे । जपने रामती बस जगाना मे सेमी कचकी
उदल सुदधे को देव सुदधाना की प्रो ग योने वरसे की पेने ने पेने पर उदल
हउ कीर सुदधे लो ग बीरा मरु कर सुदधे ही दिनु सुदधाना देरने । मरु -
जमना सुदधे पिदल के सोने मे उभेने नम के देरमी नमी वरु सुदधे की कवे
इसके देरमे कर जपने मायु कीर सुदधाना की के दिना के तारा दि कवे
मी के सुदधाना इत खेनी के नाम नाम तो मोरु सुदधे । पर सुदधे पर जपे सुदधाना
बाव नती ने मोरु सुदधे के पर है -

दिने न मे कवल श्री नाने सुदधाना श्री देवनाथी

५२२

"शुद्धचानद-बीज-मानुस्य" ५१ वृत्तीय दिवस

"शुद्धचानद-बीज-मानुस्य" ५१ वृत्तीय दिवस (श्री शिवोत्सव)

शुद्धचानद स्मृत्युक्त का वृत्तीय दिवस उसी स्थान पर उसी स्मृत्युक्त की सज्जद्वय से प्रामाण्य प्राप्त देखकर हृदय बहुत प्रसन्न हुआ। बौद्धकी उत्साहपूर्ण गद्य कृतियों में यूनन रहा था कि वह एक दिन राक्षस गीतने को भी कर्मों सुगन्ध का कर्म किया। खेले वाले के अंग-अंग फटकर उठे। लक्ष्मी कुर्य का मानुस्य होने से धरलिले 'बेज दौड़' शब्द प्रकृत हुई। व्यापक शाला के साजने का विधान लक्ष्मी के दौड़ के लिये निमत किया गया था। स्थित मॉथरकर आशानसे भरे स्फुर छोटे तो खुद ही दीव्याप दौड़ने वाले दौड़ने लगे। देवराज उद्ध जैसे अनेक जनों में देवों से आने रहते हैं ऐसे ही इस बात में भी सबसे आगे आगने खुद ही नई बात नथी। कृ. राम सुहाय जीने भी कदम अगलले स्थला, बहुत न फिट्टे, दूसरे पर आ उतरे। दौड़ का 'स्विया' हमारी राम में खुद भेदा था। २ फलानि या ६ फलानि कर्म से कम होता नालिपे था। शब्द प्रतीती की को स्थानने अलाउ (allow) न किता हो; खैर। अब लक्ष्मी कुर्य का मानुस्य आरहा है, लक्ष्मी-लक्ष्मी, दीर्घकथ, प्रीलाडोलवाले नवप्रककबलकारी श्वास भरते हुए बेचारी धरा पर मैके बेजोंके निर्दिष्टसे पिच (Pitch) देते हुए लगे जमीन को मापने। स्थाने हमारे नही प्रले परिचित रत्नगत धन्य इन्द्रदेव ही आगे रहे। आपने स्वर्ग के सामुप्यसे समुच्च न वरकर प्रत्यलोक को भी कडे वरुणों से प्राप्त ही तो जाल। आप १८ फीट द. इय कुर्य, जोकि उल्ल कुर्य थी। मुब रही। द्वितीककर यहां पर भी हमारे राम नाबू ही अपने मालूम होता है इन्होंने देवराज उद्ध का पीछा न छोड़ने की हानी थी। तीसरे थे श्रीदेवबाध दौड़ सभी हुई जन्ती थी, अयनी शान की मही रक थी। च. सुरेद्र की मूर भी खुद रेसी बैसी न थी, हमारी आशानों से कहीं अधिक थी। अब धरलिले

अब धरा को नाम से ही समुच्च न कर आरक्षण पर धावा भोलो की वीरों ने हानती, लगे अंग उंगे कुर्यो। हमारी राम में कुर्यो की सज्जद, कालाभी आदि आर्ह हैं बीसुरेद्र अदिक छिप लगते थे। उनका राज्य भी तो आप ही रहा न। कुर्यो हो। फल परीशानरिगात्र अनी निम्नलातो नहीं। तेभी उपाय से मही किडु हुआ है कि इ विशकीर ही इस बात में बाजी मार ले गये हैं। तो भी हम व. सिरे श्वली की प्रारिक्त किने जिता न रहेंगे। आप की खुद भी अचरी थी। शब्द अको अकी लक्ष्मी का फलया व मिला हो इपर पक्षीधामें महीतो बेई न ही देवराज प्रीकनाथ तान श्री धीरु भी धीरता से बूढ़ते रहे। इसलिए इन्होंने भी कर्म ले कम फर वार तो "कह-वाट" या खुद न श्रुव " कदलका हीतो लिया।

श्री गणपत

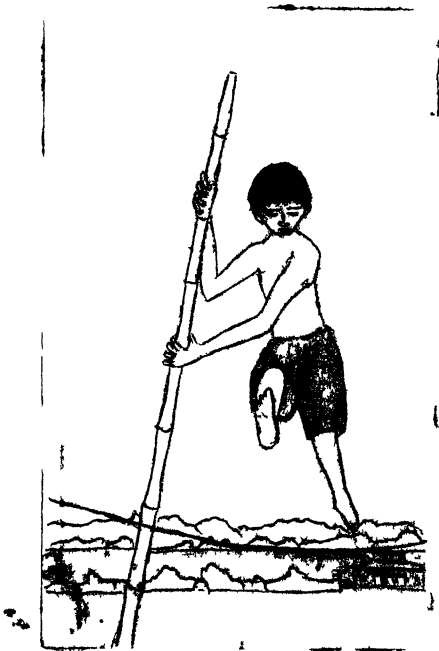
अब अत्युत्तम तथा महान् प्रयत्न ही होता है। यथा जननात्मिकका प्रयोग। सब नौ सिस्त्रिमे लगते थे। करागत दिखाने कोई न अपना प्रीत होता था परन्तु आगे थे कसरत करते या अभ्यास करते। हम अपने तहे दिल से श्री राजेन्द्र कुशा की खूब प्रशंसा की। आपने जितने व्यर्थ दिखाने, सधे हुए प्रकृतिकाल - जबते थे; रक्त थे। आपका शरीर भी इसकी गन्तु सधे र देता थी कि नारी आती है श्री नित्यानन्द की। आप हैं दोरे पर उनके प्रभावने में काम रूख पर दिखाना। न दरकि गन-ही मन रूख-खूब करते थे। आपका श्री शरीर क्वरतव के companions में ही था। हम आशा करते हैं कि श्री नित्यानन्द इस विषय में यदि दत्त भित्त हो लगे रहे हगे तो वे उद्यम सफल हगे। इनके अतिरिक्त महाशयरी प्रेम सागर जी व. हलदेव जी द्वारधीय खूब रहे। सबसे अधिक प्रशंसनीय थे दो महाशयरी; एक श्री देवनाथ, दूसरी श्रीराज बाबू। आपने कभी इसकाय में हाथ भी कभी न लगाया होगा प्राण तोभी पहिली बार की कोशिश में ही करये से कहिये रहे। इस विषयका परिणाम इस प्रकार से है :-

- Rings - प्रथम श्रीराजेन्द्र, द्वितीय श्री नित्यानन्द तथा श्री देवनाथ।
- ट्रेजेडी - प्रथम श्री राजेन्द्र, द्वितीय श्री देवनाथ श्री,
- पेंसिल बर - प्रथम श्री नित्यानन्द, द्वितीय श्रीराजेन्द्र।

अब गोल कैंकने की नारी आती है। यह कोई गजबली बात नहीं। आजकल भारतकी विधिति को देखकर गोला कैंकना उचित तो क्या आवश्यक कर्तव्य लगता है। सीधा गोला कैंकने में व. इन्द्र अपनी त्यागात्मिक आदत को अत्युत्तम प्रकृत रहे। द्वितीय ३० फीट के करीब गोले की शरथी १-अप का धोया। हमारे आत्मानन्द जी कभी गजबले रहे। उसीने दो चार बार तो श्री इन्द्र की के दिल को सुशक कर दिया था। प्रकृत आदित्यर किही कारणों से आप द्वितीय रहे। सबीभी इसका मूल आपने उलटा गोला कैंकने में निकाल दिया और प्रथम निकल आये। व. देवनाथ चतुर्थी द्वितीय रहे। गोला शर में व. सुरेन्द्र भी खूब रहे चाहे शरथ की कोटि में न आये हों पर ऊपर तो जाते ही थे। अब कहीं तो तब प्रथम आयेगे ही।

अब एक रसमयी, लक्ष्म नरी लुगी दौड़ दौड़ी आयी। यह खूब रही। इस में कौन विजयी रहे ? जिन्हें जीते की अमृत वर मिला। वही यहाँ पर भी - वे थे व. इन्द्र। आप अकेले छल। सत्यदेवजी ने जगता को खूब हँसाया। वेगो हीश-ये Players थे। इस प्रकार शत्रुत्व सातारण्य के गलिय विविध के प्रान कल की कायि कही समाप्त हुआ। अज भी खेलने में सबसे खूब आनन्द अनुभव किया। खेल खूब सफल रहे। दरकी का अला वृथा न गया। आज भी हम अपने अथक उताही, न्यायशील, नियुक्त नानी जी व. प्रशंसा शब्दों में न करते हुए तहे दिल से करते हैं

पानी का -



६८

६९

लम्बी तैरी

ब. देवनाथ.

प. ३५.

ब. इंदिरा

प. ३६

ब. श्रीराम

प. ३७

ब. चित्रांगद को द्वितीय लेखनागद १००० इनाम लीहल
उआ

सिंह तैरी-

ब. चित्रांगद - २ मि. ५ लेखनागद.

ब. देवनाथ + ब. आलागद - २ मि. २० लेखनागद.

श्री वासुदेवजी V. A. मि. ५५ लेखनागद.

